

कौन तय करता है कि मेरी जगह कहाँ है?

रितिका चावला

"घण्टी बजी। मैंने बस्ते में से अपना खाने का डिब्बा निकाला और कक्षा से निकल गई। मैं सीढ़ियों से नीचे उतरी और छप्पर के नीचे अपनी रोज की जगह पर जाकर बैठ गई। लोहे के जंगले की सलाखों के बीच में से झाँकते हुए, मैंने अपनी कक्षा की कुछ लड़कियों के समूह को पेड़ के नीचे गोल घेरे में बैठे हुए देखा। कुछ और बच्चे मैदान में खेल रहे थे। मैंने अपना खाना खत्म किया और जाकर बाई के पास जाकर बैठ गई। बाई ही स्कूल में मेरी अकेली दोस्त है। वह दफ्तर में काम करती है, और चिढ़ाने के लिए मुझे 'शक्तिमान' कहती है, पर मुझे अच्छा लगता है। स्कूल में हर दिन एक जैसा लगता है, हर मध्यान्ह भोजन का अवकाश भी एक जैसा...... हर दोपहर को मैं परिचित चेहरे खोजती हुई इधर–उधर घूमती रहती हूँ।" स्नेहा*

"स्कूल का वार्षिक दिवस आने वाला है। मैं बहुत उत्साहित हूँ। उस दिन साल में एक ही बार मुझे लगता है कि लोगों को मेरी जरूरत है। मुझे नृत्य करने से प्यार है, और मैं उसमें अच्छी हूँ। नृत्य प्रदर्शन करने की योजना बनाने वाले सभी समूह मुझे उसमें शामिल करना चाहते हैं। कक्षा में अन्य दिनों से यह एकदम फर्क होता है। हर बार जब भी शिक्षिका हमें समूह में करने के लिए कुछ काम देती हैं, तो कोई भी तब तक मुझे अपने समूह में नहीं लेता जब तक कि शिक्षिका उनको ऐसा करने के लिए नहीं कहतीं। यदि समूहों को शिक्षिका द्वारा बाँटा गया होता है, तो मुझे सबसे आसान काम, जैसे तस्वीरें इकट्ठी करने का काम, करने को दिया जाता है। मैं जानती हूँ कि मुझे चीजों को लिखने और याद रखने में दिक्कत होती है, लेकिन ऐसा नहीं है कि मैं वह जानबूझ कर करती हूँ। मैं अपनी कक्षा के समूहों का हिस्सा क्यों नहीं हो सकती, और सिर्फ नृत्य करने के लिए नहीं?" सोनल*

स्नेहा और सोनल की ये दोनों कहानियाँ सच्ची हैं। वे दोनों एक समावेशी स्कूल की कक्षा 8 में सहपाठी हैं। जब मैं 'समावेशी' कहती हूँ, तो मेरा मतलब है कि यह ऐसा स्कूल है जहाँ सभी प्रकार की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों के बच्चे, तथा सीखने की कठिनाइयों से जूझ रहे बच्चे, और उनके साथ ही तंत्रिका–सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त बच्चे, सभी एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। सीखने की कठिनाइयों या अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चों को स्कूल तथा शिक्षकों के द्वारा सुधारात्मक कक्षाओं, गणित तथा अँग्रेजी में समानान्तर कक्षाओं, भिन्न पाठ्यक्रमों, भिन्न मूल्यांकनों आदि के माध्यम से अतिरिक्त सहायता प्रदान की जाती है। स्कूल के सभी शिक्षक और कर्मचारी विशेष जरूरतों वाले बच्चों को जानते हैं, चाहे वे उन्हें पढ़ाते हों या नहीं पढ़ाते हों। लिए जाने वाले हर निर्णय के बारे में माता–पिताओं को जानकारी दी जाती है, तथा माता–पिताओं, शिक्षकों, प्रधानाचार्य और कभी–कभी स्कूल के कानूनी सलाहकार को बैठकों में शामिल करते हुए उनके बीच में संवाद का मजबूत रिश्ता बनाया जाता है। फिर भी, स्नेहा और सोनल जैसे बच्चों के लिए कुछ ऐसा है जिसको स्कूल, या माता–पिता न तो नियंत्रित कर सकते हैं, न बदल सकते हैं– वह है स्कूल के 'अन्य' बच्चे।

स्नेहा डाउन सिंड्रोम से पीड़ित है और अपनी इस समस्या के कारण अन्य लोगों को अजीब–सी दिखाई देती है। ऐसा नहीं है कि उसकी कक्षा के बच्चे कभी उसके निकट नहीं आए। शुरुआत में जब एक नई विद्यार्थी उसकी कक्षा में शामिल हुई तो उसने स्नेहा से बात करने की कोशिश की, पर जब उसे महसूस हुआ कि स्नेहा अत्यन्त संवेदनशील लड़की है तो वह उससे दूर हो गई। हालाँकि उसकी सहपाठियों ने कभी उसे परेशान नहीं किया और न ही चिढ़ाया, पर फिर भी एक तरह से स्नेहा के लिए दोस्तों की कमी है। अन्य बच्चों के विपरीत, उसके जीवन में 'लड़कियों के साथ उनके या अपने घर पर रात को ठहर जाना' या किशोरियों की जन्मदिन की पार्टियाँ आदि नहीं होतीं, ऐसे आयोजनों में वह बहुत ही कम निमंत्रित की

*Name changed to protect identity.

जाती है। उसे तभी बुलाया जाता है जब पूरी कक्षा को निमंत्रित किया जाता है, लेकिन तब नहीं जब कोई बच्ची अपनी कुछ खास सहेलियों को निमंत्रित करती है।

दूसरी ओर, सोनल को उस तरह से सचमुच में दोस्तों की कमी नहीं है। वह नृत्य करने में बेहद निपुण है और उसे पाठ्यक्रम से इतर सभी गतिविधियों में भाग लेना अच्छा लगता था। लेकिन जब बात शैक्षिक कार्य की होती तब उसे यह एहसास होता था कि वह 'पर्याप्त बुद्धिमान नहीं थी'। इस तरह के भेदभाव के सूक्ष्म रूपों ने उसे आहत किया। वह ये भावनाएँ अपने माता–पिता या शिक्षकों के साथ साझा नहीं करती, क्योंकि उसे लगता है कि वे इससे बहुत चिन्तित हो सकते हैं। वह कम बच्चों वाली समानान्तर कक्षा का भी हिस्सा है। इस कक्षा ने उसे अपनी अँग्रेजी की शिक्षिका के साथ एक विशेष सम्बन्ध निर्मित करने में मदद की है, पर अभी भी वह सामान्य कक्षा में आने की उम्मीद करती है।

सोनल जैसे बच्चों के लिए समावेशी परिवेश का हिस्सा होना बहुत मुश्किल होता है, और स्नेहा जैसे बच्चों के लिए यह और भी बदतर हो जाता है क्योंकि उनकी कमी साफ दिखाई देती है। स्कूल के शिक्षकों तथा कर्मचारियों द्वारा उनके साथ समान रूप से या अधिक संवेदनशीलता से पेश आने या स्कूल के वार्षिक दिवस के मौके पर विशेष तवज्जो देने से उस सबकी भरपाई नहीं होती जिसका सामना इन बच्चों को रोज ही करना पड़ता है। जब इन बच्चों को चिढ़ाया गया या उनकी हँसी उड़ाई गई, तो उन स्थितियों में शिक्षकों ने हस्तक्षेप किया और दूसरे बच्चों को इसके लिए डाँटा। ऐसे भी अवसर आए जब शिक्षकों ने बच्चों का गोल घेरा बनवाया ताकि वे कक्षा की विविधता को समझ सकें और दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील हों। उन्होंने ऐसे बच्चों और उनके सहपाठियों, दोनों से एक–एक करके बातचीत भी की। लेकिन आखिरकार उनके सहपाठी भी बच्चे ही हैं, एक सीमा के बाद उन्हें "भाषण देने" का परिणाम नकारात्मक हो सकता है। इसलिए, शिक्षक वास्तव में किस हद तक ऐसे मामलों में हस्तक्षेप कर सकते हैं? ऐसे बच्चों के लिए स्थितियों को वे वाकई में कितना नियंत्रित कर सकते हैं, या बदल सकते हैं? क्या वे विद्यार्थियों के व्यवहार को सचमुच में इस सीमा तक प्रभावित कर सकते हैं? हो सकता है कि लम्बे समय में ऐसा हो सके, पर तत्काल तो यह नहीं हो सकता।

अधिकांश विद्यार्थियों का कोई दोस्त या दोस्तों का समूह होता है। दोस्ती का आधार वे साझा चीजें होती हैं जिनमें उनकी रुचि होती हैं या फिर दोस्ती चीजों को साझा करने और अपने विचार और अनुभूतियों को बाँटने की बुनियादी जरूरत को पूरा करने के लिए होती है। लेकिन किसी स्तर पर, विशेष जरूरतों वाले बच्चों में इसका अभाव प्रतीत होता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए समानान्तर कक्षाओं के माध्यम से स्कूल अतिरिक्त सहायता प्रदान करता है। वे बच्चे भी इन कक्षाओं का हिस्सा होते हैं, जो अन्य कारणों से, जैसे कि कम अंक पाने के कारण, गणित और अँग्रेजी के साथ संघर्ष कर रहे होते हैं। हालाँकि अधिकांश बच्चों ने कहा कि समानान्तर कक्षाएँ मददगार होती हैं, लेकिन जो बच्चे कभी भी इन कक्षाओं में शामिल नहीं हुए, वे उनमें न भेजा जाना ही पसन्द करते हैं।

समावेशी स्कूल के परिवेश से एकबारगी निकल चुकने के बाद, विद्यार्थियों के अनुभवों के बारे में पूछे जाने पर, इस स्कूल विशेष के प्राचार्य ने जिक्र किया कि जो "सामान्य" बच्चे थे, वे जब वापस आए तो एक समावेशी परिवेश से उन्हें परिचित कराने के लिए कृतज्ञता अनुभव करते हुए उन्होंने स्कूल को धन्यवाद दिया। उदाहरण के लिए, जब उन्हें अपने विश्वविद्यालयों या कार्य स्थलों में विविधता का अनुभव हुआ, तो वे दूसरे लोगों के प्रति अधिक संवेदनशील थे; लेकिन विशेष जरूरतों वाले विद्यार्थियों में से कोई भी अपने अनुभवों के बारे में बात करने के लिए, और यह बताने के लिए लौटकर नहीं आया कि क्या उन्हें भी अपनी स्कूली पढ़ाई के दौर में मजा आया था। क्या स्कूल में अन्य सभी विद्यार्थियों की तरह वे भी सचमुच में खुश थे? मुझे यकीन है कि हर बच्चे को स्कूल में दूसरे सभी बच्चों से अलग अनुभव होता है, लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम सभी अपने पूरे जीवन भर सराहते हैं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण होते हैं दोस्ती के वे रिश्ते जो हम स्कूल में बनाते हैं, और जो कभी–कभी जिन्दगी भर चलते हैं।

पिछले चार वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में होने के कारण, मुझे यह समझ में आया है कि बहुत–सी चीजों को बदले जाने की जरूरत है। मैं समावेशी परिवेशों से सम्बन्धित बहुत–सी दुविधाओं के बारे में सोच सकती हूँ, जैसे कि यदि मैं ऐसे विद्यार्थियों की सहपाठी, या फिर शिक्षिका ही होती तो मुझे यह समझने में मुश्किल होती कि मैं उनके साथ समानुभूति पूर्ण व्यवहार रखूँ या उनके साथ अन्य "सामान्य" विद्यार्थियों की तरह ही पेश आऊँ। क्या ये विद्यार्थी विशेष स्कूलों में बेहतर प्रदर्शन करेंगे, या उन्हें वहाँ भेजना एक तरह का बहिष्कार होगा, जो समावेशी

परिवेशों में उनके साथ अलग प्रकार का व्यवहार किए जाने से भी बदतर होगा।

मैं समझती हूँ कि यदि हम इस देश के हर बच्चे तक पहुँचना चाहते हैं तो शायद समावेश ही उसका मार्ग है। यदि हम उचित तरीके से शिक्षकों को प्रशिक्षित करें तथा सभी स्कूलों में विशेष शिक्षा के विशेषज्ञों को रखें, लोगों की मानसिक सोच को बदलने के लिए पालकों तथा समुदाय को इसमें शामिल करें, मूल्यांकन के प्रारूपों को बदलें, और पाठ्यक्रम तथा शिक्षा पद्धति में सुधार करें, तो इसे बेहतर ढंग से क्रियान्वित किया जा सकता है। पर इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है कि क्या यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका है कि सभी बच्चों को, उनकी विशेष जरूरतों के बावजूद, स्कूली पढ़ाई का बहुत सुखद अनुभव हो? क्या अलग रखने की प्रवृत्ति को पूरी तरह से नियंत्रित करने का कोई तरीका है? यह एक जटिल मुद्दा है, और जैसा कि पहले जिक्र किया गया है, इसका समाधान खोजने के लिए शिक्षकों, पालकों, कानूनी सलाहकारों और विशेष शिक्षा के विशेषज्ञों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। और जहाँ तक इसके समाधान का प्रश्न है, इसका हल छोटे–छोटे कदमों में हो सकता है – जैसे कि दिए जाने वाले काम को बाँटने का जिम्मा विद्यार्थियों को सौंपने के बजाय यह स्वयं शिक्षक के द्वारा ही किया जाना, या कि केवल अंक हासिल करने के रवैए के बजाय बच्चों को सहयोग करते हुए काम करने की प्रक्रिया का मूल्य समझाना, और विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए दया महसूस करने या उनसे दूर रहने के बजाय, सहपाठियों को उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना। मैं जानती हूँ कि अक्षमता ग्रस्त बच्चों को अपनी सीमाओं का एहसास होता है, लेकिन हम कम से कम इतना तो कर सकते हैं कि उन्हें निरन्तर अपनी कमियों के बारे में ही न सोचना पड़े, बल्कि हम उन्हें समुचित सम्मान के साथ वैसे ही स्वीकार करें जैसे वे हैं। समाज की सोच में ऐसा परिवर्तन लाने के लिए हमें चेतना निर्मित करने और अपने–अपने समुदायों में समावेश का प्रचार–प्रसार करने की जरूरत है।

एक बात स्पष्ट है–अपने विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और व्यवहार में बदलाव लाने के लिए हमें अभी लम्बा सफर तय करना है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए समावेश एक दूर का सपना है, और अभी हम परिवर्तन की केवल दहलीज पर खड़े हैं। यह परिवर्तन सबसे पहले शिक्षकों, स्कूलों तथा अन्य संस्थानों, पालकों, सहपाठियों, और व्यापक समाज के दृष्टिकोणों में होना पड़ेगा। साथ ही, यह परिवर्तन ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर दोनों दिशाओं में होना पड़ेगा, जिसमें ऊपर नीतियों में परिवर्तन होंगे और नीचे आचरण–आधारित परिवर्तन होंगे। जब तक हम पालकों, शिक्षकों और विशेष जरूरत वाले बच्चों को स्वयं तथा उनके हमउम्र साथियों सहित अन्य भागीदारों को इस प्रक्रिया के हर कदम में शामिल नहीं करेंगे, तब तक समावेश को हकीकत में हासिल करना एक बड़ी चुनौती बनी रहेगी।

रितिका चावला फिलहाल स्कूलों के प्रमुखों/प्राचार्यों/प्रधान अध्यापकों को प्रशिक्षित करने वाले एक संगठन, इंडिया स्कूल लीडरशिप इंस्टीट्यूट, में प्रोग्राम मैनेजर–नेशनल फैलोशिप के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्होंने हाल ही में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से एम.ए. (शिक्षा) का अध्ययन पूरा किया है और वे टीच फॉर इंडिया (टी.एफ.आई.) की पूर्व–छात्रा हैं। टी.एफ.आई. फैलोशिप के दौरान उन्होंने मुम्बई के एक नगरपालिका स्कूल में पढ़ाया तथा अपने स्कूल की इमारत को फिर से बनवाने की परियोजना पर भी कार्य किया। यह लेख मास्टर्स प्रोग्राम के अन्तर्गत उनके विस्तृत अध्ययन 'अन्डरस्टैंडिंग टीचर्स', पेरेन्टस एण्ड स्टूडेंट्स माइण्डसैट्स इन एण्ड टुवर्ड्स इनक्लूजिव क्लासरूम सैटिंग्स'' का हिस्सा है। उनसे ritika@indiaschoolleaders.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद**: सत्येन्द्र त्रिपाठी